DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
भाषा में परिवर्तन की दशाएँ
LIVE 12-04-2024 05:00 PM

भाषा के अंग

- ध्वनि
- पद
- वाक्य
- अर्थ

स्टेशन - इस्टेशन

कर्म = करम

भाषा में परिवर्तन

1. ध्वनि
2. शब्द / प्रातिपदिक
3. पद
4. वाक्य
5. अर्थ

ध्वनि - परिवर्तन (Phonetic Changes)

ध्वनि - परिवर्तन के कारण

भाषा का प्रमुख तत्त्व ध्वनि है। वक्ता इसका उच्चारण करता है और श्रोता इसे सुनता है। वक्ता की ध्वनि पर दो प्रकार का प्रभाव पड़ता है – १. आभ्यन्तर, २. बाह्य । वक्ता और श्रोता से संबद्ध कारणों को आभ्यन्तर कारण कहते हैं। जैसे— प्रयत्नलाघव, मुखसुख, अज्ञान, शीघ्र भाषण आदि। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों को बाह्य कारण कहते हैं। ये कारण बाहर से ध्वनि को प्रभावित करते हैं। जैसे- सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक आदि कारण।

इस प्रकार ध्वनि परिवर्तन के कारणों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है –

(क) आभ्यन्तर कारण,

(ख) बाह्य कारण ।

(क) आभ्यन्तर कारण,

(१) प्रयत्नलाघव या मुखसुख (Economy of effort)—इसको उच्चारण- सुविधा या उच्चारण-सौकर्य भी कहते हैं। यह ध्वनि - परिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण है।

मनुष्य स्वभाव से ही कम प्रयत्न करके अधिक लाभ उठाना चाहता है। कम प्रयत्न से ही अपने भावों को स्पष्ट करना चाहता है । मुख की सुविधा के कारण इसे मुख-सुख और उच्चारण की सुविधा या सरलता के कारण उच्चारण-सुविधा आदि कहते हैं । मुख-सुख के लिए कठिन शब्दों को सरल बनाया जाता है और क्लिष्ट उच्चारणों को आदि-स्वरागम, मध्य स्वरागम आदि के द्वारा सरल बनाया जाता है। जैसे—सत्य > सच, कर्म >

काम, चक्र > चक्कर, ब्राह्मण > बाम्हन, प्रचार > परचार, स्टेशन इस्टेशन, हॉस्पिटल > अस्पताल ।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में भी यह प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। शिलालेखों में शुक्लपक्ष दिवस को शुदि > सुदी, बहुल पक्ष (कृष्ण पक्ष) दिवस को बदि > बदी लिखा गया है। इससे सुदी और बदी शब्द प्रचलित हुए हैं।

संस्कृत व्याकरण में प्रत्याहार इसी प्रक्रिया के परिचायक हैं। जैसे- अच् = पूरे स्वर, हल् = पूरे व्यंजन, अल् = पूरी वर्णमाला। इसी प्रकार इक्, यण्, एच्, खर्, जश् आदि शब्द |

ध्वनि-परिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण प्रयत्नलाघव है। यही समीकरण, विषमीकरण, लोप, आगम, वर्ण-विपर्यय आदि के मूल में है ।

(२) लघुकरण की प्रवृत्ति - लंबे शब्दों को संक्षिप्त या लघु कर दिया जाता है। इसके मूल में भी प्रयत्नलाघव की प्रवृत्ति है। यह प्राचीन प्रवृत्ति है । वार्तिककार कात्यायन ने भी इसका निर्देश दिया है कि नामों आदि में एक अंग के उच्चारण से काम चलाया जाता है । जैसे— देवदत्तः को देवः या दत्तः, सत्यभामा को सत्या या भामा ।

विनापि प्रत्ययं पूर्वोत्तरपदयोर्वा लोपो वाच्यः । (वार्तिक ५. ३. ८३ सूत्र पर) इसी प्रकार उपाध्याय > ओझा > झा, नेफा, पेप्सू, मीसा, यूनेस्को आदि शब्द हैं। अंग्रेजी में पूरे नाम के स्थान पर प्रथम अक्षर ले लिए जाते हैं। जयदेव — ज. दे., राम- दत्त > रा. द.। हाई-स्कूल — H.S., मास्टर ऑफ आर्ट्स – M.A. आदि । इसी प्रकार भारत-यूरोपीय > भारोपीय शब्द हैं। अंग्रेजी में Break fast + Lunch = Brunch जैसे शब्द प्रचलित हो गए हैं। इस प्रकार नाश्ता + भोजन = नाभो सकता है। North East West South से News (समाचार) बना है ।

(३) अनुकरण की अपूर्णता - अनुकरण के द्वारा ही भाषा सीखी जाती है । वाग्यन्त्र की त्रुटि या अज्ञान आदि के कारण अनुकरण पूर्ण नहीं हो पाता है, अतः कुछ शब्दों में परिवर्तन हो जाता है । र का उच्चारण कठिन है, अतः बच्चे राम को लाम, रोटी को लोटी या नोटी कहते हैं। अपढ़ आदमी ज्वायंट को जैन, इंस्पेक्टर को सिपट्टर, कोर्ट इंस्पेक्टर को कोट साहब आदि कहते हैं। अंग्रेजी के प्रभाव से दीप्ति-शंकर > डिप्टी शंकर हो गया है। ओं नमः सिद्धम् > ओनामासीधम् हो गया है।

(४) अशिक्षा - अशिक्षा या अज्ञान के कारण ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है । लैन्टर्न > लालटेन, गार्ड गारद, लाइन लैन | यह उपर्युक्त दोनों कारणों के साथ मिलकर भी काम करता है । जैसे—मास्टर साहब > मास्साब, साधु > साहु, साहु > साव, गोस्वामी > गोसाईं । अंग्रेजी और अरबी-फारसी आदि के शब्दों में ज़ को ज, क़ को क,

को ग, त को ट आदि कर देते हैं। वन्द्योपाध्याय > बनर्जी, मुख्योपाध्याय > मुकर्जी, गंगोपाध्याय > गांगुली भी इसी प्रकार बने हैं।

(५) शीघ्र भाषण - शीघ्र बोलने के कारण भी ध्वनि में परिवर्तन हो जाता है। इसमें मध्यगत ध्वनियों का प्रायः लोप हो जाता है। इसके साथ लघूकरण की प्रवृत्ति भी देखी जाती है। जैसे— पद्मादत्त दादा > पद्दा, पदिया (कुमाऊँनी), लालमणि दादा > लल्दा, भ्रातृजाया > भौजी, उन्होंने > उन्ने, किसने > किन्ने, अब ही अभी, तब ही > तभी, किस ही > किसी, अंग्रेजी में Do not > Don't, Will not > Won't

(६) भावावेश - प्रेम, क्रोध आदि भावावेश में शब्दों में ध्वनि-परिवर्तन हो जाता है। राम > रामू, कृष्ण> कान्ह, कन्हैया, लालचन्द > लल्लू, पुरुषोत्तम परसू, माँ > मम्मी, पिता > पापा, लालित > लाड़ला, बच्चा > बाचा, बचवा, बाबू > बबुआ, बब्बू आदि। ऐसे शब्दों की संख्या न्यून है।

(७) काव्यात्मकता — काव्य में छन्द के कतिपय नियमों का पालन करना पड़ता है। इसके लिए कभी ह्रस्व को दीर्घ, दीर्घ को ह्रस्व, कुछ वर्णागम आदि किया जाता है। संस्कृत की सूक्ति है—' अपि माषं मषं कुर्यात् छन्दोभङ्गं न कारयेत्' – माष (उड़द) को मष कर दे, पर छन्दभंग न करे। हिन्दी के सभी काव्यों में, विशेषकर सूर, तुलसी और रीतिकालीन कवियों के काव्यों में यह प्रवृत्ति बहुत है । फलस्वरूप ध्वनियों में परिवर्तन

हो जाता है। लय एवं तुक के लिए बहुत से शब्दों में ध्वनि-परिवर्तन किया जाता है। जैसे—- वीर वीरा, कबीर > कबिरा, सूर > सूरा, नदी > नदिया, देहली > देहरी, द्वार > दुआर, स्थिर > थिर नहीं > नाहीं ।

(८) **बलाघात** – ध्वनिपरिवर्तन में बलाघात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस ध्वनि पर बल दिया जाता है, वह शेष रहती है, अन्य निर्बल ध्वनियाँ क्षीण हो जाती हैं । अतएव संस्कृत में चतुरीय और चतुर्य के तुरीय और तुर्य (चतुर्थ) रूप हो जाते हैं। इसी प्रकार अभ्यन्तर > भीतर, उपरि > पर, एकादश > ग्यारह, द्वादश > बारह ।

(९) कृत्रिमता — आत्माभिव्यक्ति के लिए कुछ व्यक्ति शब्दों को तोड़-मरोड़ कर बोलते हैं। इसे बनावटीपन कह सकते हैं। इसी प्रकार यदृच्छा (बनावटी) शब्द भी गढ़ लिए जाते हैं। इसका स्थायी प्रभाव नहीं होता है। जैसे—भाई > भइया, भ्राता > प्रा (पंजाबी), बैठो > बैटो, उठो > उट्टो, बहिनों > भैनों, छात्र > क्षात्र, स्मरण > सुमिरन, शुमिरन, स्पष्ट > अस्पष्ट।

(१०) भ्रामक व्युत्पत्ति - भ्रमवश कुछ शब्दों को स्वभाषा के अनुरूप बना लिया जाता है। अन्य भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में लेते समय प्रायः इस प्रकार के ध्वनि- परिवर्तन होते हैं। मैक्समूलर मोक्षमूलर, इन्तिकाल (अरबी) > अन्तकाल, प्रोग्राम > पुरोगम, लाइब्रेरी रायबरेली, आर्ट्स कालेज आठ कालेज, गो डाउन> गोदाम, बनर्जी > बन्दर जी ।

(ख) बाह्य कारण

(११) भौगोलिक प्रभाव - भौगोलिक कारणों से ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है। फारसी में स का ह हो जाता है। जैसे-सिन्धु > हिन्दु, सप्ताह > हफ्ता । पहाड़ी जिलों में स को श बोलते हैं। समाचार > शमाचार, सन्देश शन्देश, सीट > शीट । उच्च जर्मन और निम्न जर्मन में भौगोलिक कारणों से ही ध्वनि - परिवर्तन हुआ है । जैसे- - उच्च जर्मन में d > t (द् को त्) drink > trinken, day > tag, आदि के t > z (त् को त्स) two > zwei, th को d (थ् > ढ) > earth > erde, brother > bruder.

(१२) सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ — सामाजिक एवं राजनीतिक उन्नति या अवनति के कारण शब्दों में ध्वनि-परिवर्तन हो जाता है। उन्नति की अवस्था में शब्दों के शुद्धरूप पर बल दिया जाता है और अवनति के समय अपभ्रंश रूपों की अधिकता होती है। पण्डित > पंडा, यजमान > जजमान, दिल्ली > देहली, Delhi, मुंबई > बम्बई, Bombay, कलिकाता > कलकत्ता, बुद्ध > बुद्धू, लुंचितकेश > लुच्चा, आर्डर्ली > अर्दली, वाराणसी > बनारस

(१३) काल-प्रभाव या स्वाभाविक विकास - काल के प्रभाव से भाषा में विकास या परिवर्तन होता रहता है। फलस्वरूप वैदिक संस्कृत से संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं वर्तमान भारतीय भाषाओं का विकास हुआ। जैसे—दृश् से देखना, अस् से होना, खाद् से खाना, पा से पीना, वर्तते > बाटे, बा, निवर्तते > निबटता है।

(१४) **लिपि-दोष** - विभिन्न लिपियों की अपूर्णता के कारण भी ध्वनि-परिवर्तन देखा जाता है। अंग्रेजी और उर्दू आदि के प्रभाव के कारण ध्वनियों के उच्चारण में अन्तर हो गया है। जैसे— अंग्रेजी में राम > रामा, कृष्ण > कृष्णा, आर्य > आर्या, बुद्ध > बुद्धा, गुप्त गुप्ता, मिश्र > मिश्रा, आदि । उर्दू के प्रभाव के कारण आर्यसमाज > आर्यासमाज, प्रचार > परचार, अर्जुन > अरजुन, इन्द्रजित् > इन्दरजीत, सुरेन्द्र > सुरेन्दर या सुरिन्दर आदि ।

Ram Rama

(१५) अन्य भाषाओं का प्रभाव – अन्य भाषाओं के प्रभाव के कारण भाषा की ध्वनियों में परिवर्तन देखा जाता है। फारसी और अरबी के प्रभाव के कारण हिन्दी में भी क़ ग़ज़ आदि ध्वनियाँ फारसी या उर्दू के शब्दों में लिखी और बोली जाती हैं। यह माना जाता है कि भारोपीय भाषाओं में टवर्ग नहीं था । द्रविड़ परिवार की भाषाओं के संपर्क से संस्कृत आदि में टवर्ग ध्वनि आई है। जैसे—प्रकृत प्रकट, संकृत > संकट, विकृत विकट । अंग्रेजी के प्रभाव से हिन्दी में ज़ ध्वनि। Is - इज़, His-हिज़

(१६) साद्दश्य – साद्दश्य या समानता के आधार पर कुछ ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है। जैसे— द्वादश के साद्दश्य पर एकादश। द्वि का द्वा होता है, पर एक में आ नहीं आ सकता है। यह साद्दश्यमूलक है। दण्डिन् + आ = दण्डिना, करिणा आदि में ना ठीक है, पर अग्निना, वारिणा, शुचिना (तृ० एक०) में ना केवल साद्दश्य के आधार पर है। तुभ्यम् > तुझे के साद्दश्य पर मह्यम् > मुझे हो गया। मह्यम् में उ नहीं है। पैंतालीस के साद्दश्य पर सैंतालीस में भी अनुनासिकता आई है।

५. १९. ध्वनि - परिवर्तन की दिशाएँ

आधुनिक भाषाविज्ञान में इस विषय का अधिक विस्तार से विवेचन हुआ है।

(१) समीकरण (Assimilation)

जब दो विषम ध्वनियाँ एकत्र होती हैं तो एक ध्वनि दूसरी ध्वनि को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती हैं। यह समीकरण दो प्रकार का होता है-

काक → काग

भाषा की विशेषताएँ

मानवीय भाषा में कतिपय विशेषताएँ उपलब्ध होती हैं, जो मानवेतर जीवों- पशु, पक्षी आदि की भाषा में प्राप्त नहीं होती हैं। प्रोफेसर हाल (Robert A. Hall Jr.) ने भाषा के सम्बन्ध में मानव और मानवेतर जीवों की तुलना करते हुए प्रो० हॉकेट (Hockett) का मत उद्धृत किया है कि मानवीय भाषा में निम्नलिखित ७ विशेषताएँ हैं, जो मानवेतर जीवों में अप्राप्य हैं ।

(क) द्वैतता (Duality) – प्रत्येक भाषा में दो तत्त्व अवश्य होते हैं - (१) सार्थक ध्वनि-अंश (स्वनिम, Phoneme), (२) सार्थक रूप- अंश (रूपिम, Morpheme) ।

(ख) उत्पादन क्षमता (Productivity) -मानवीय भाषा में यह सामर्थ्य है कि वह संघटनात्मक ऐसे वाक्यों की भी रचना कर सकती है, जिसे वक्ता और श्रोता ने उससे पूर्व कभी न कहा हो, न सुना हो। पर दोनों ही पक्ष उसे सरलता से समझ सकते हैं ।

(ग) यादृच्छिकता (Arbitrariness) – भाषा के किसी अवयव (संज्ञा, क्रिया आदि) और अर्थ में कोई जन्मसिद्ध निश्चित सम्बन्ध नहीं है। सभी शब्दों के अर्थ यादृच्छिक (स्वेच्छा से रखे गये) हैं। वे प्रत्येक भाषा में संकेत-जन्य हैं।

(घ) प्रेषण और ग्रहण में परस्पर परिवर्तनीयता (Interchangability)-

मानवीय भाषा में प्रेषण और ग्रहण में परस्पर परिवर्तनीयता की क्षमता है। भाषा का उपयोग करने वाला कोई भी व्यक्ति व्यक्त वाक् के द्वारा अपने भाव या सन्देश को दूसरे तक पहुँचा सकता है और साथ ही दूसरे के द्वारा कहे गये वक्तव्य को सुन और समझ सकता है । कहना और सुनना के द्वारा आदान-प्रदान की प्रक्रिया में परिवर्तन - क्षमता रहती है।

(ङ) भाषा में विशेषीकरण (Specialization) - प्रत्येक मानवीय भाषा की अपनी एक विशेष पद्धति है, जिसके द्वारा अपने ढाँचे और अर्थ में सीमित रहते हुए वह भाव-संप्रेषण का कार्य सरलता से करती है। अपने बोध्य अर्थ या क्रिया से इसका साक्षात् भौतिक सम्बन्ध नहीं के बराबर होता है ।

Subj + helping verb + main verb + object

कर्ता कर्म क्रिया

(च) भाव- अभाव, मूर्त-अमूर्त का द्योतन (Displacement) मानवीय भाषा भाव और अभाव एवं मूर्त और अमूर्त सभी प्रकार के अर्थों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है। भाषा विद्यमान वस्तुओं के अतिरिक्त अविद्यमान वस्तु का भी बोध कराती है; जैसे - घटाभाववद् भूतलम् — यहाँ पृथ्वी पर घड़ा नहीं है। अतीत का प्रकाशन —राम ने रावण का वध किया। राम इस समय विद्यमान नहीं हैं। इसी प्रकार अमूर्त न्याय, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, परमात्मा, ब्रह्म आदि का बोध कराया जाता है। आकाश - कुसुम, व्योमपुरी, वन्ध्या-पुत्र आदि सर्वथा अभावात्मक का भी द्योतन भाषा द्वारा किया जाता है।

(छ) सांस्कृतिक परम्परागतता (Cultural transmission) – मानवीय भाषा पैतृक परम्परा से नहीं, अपितु शिक्षा के द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संक्रमित होती है। बाल्यकाल में हम अपने से बड़ों का तथा अपने समकालीन व्यक्तियों का अनुकरण करके भाषा सीखते हैं। इस प्रकार तथा अन्य साधनों से जो ज्ञान अर्जित किया जाता है, उसे हम अपनी अगली पीढ़ी को दे देते हैं। यह भाषा का ही महत्त्व है कि मानवीय ज्ञान संगृहीत 'होता रहता है और भावी पीढ़ी को नये ढंग से शून्य से ज्ञान - वृद्धि करते हुए नया वाङ्मय नहीं तैयार करना पड़ता, अपितु पूर्वजों के ज्ञान का लाभ उठाते हुए शीघ्र ज्ञान - वृद्धि का अवसर मिलता है।